

छांदोग्य पुं. (तत्.) 1. सामवेद से संबंधित एक ब्राह्मण ग्रंथ 2. छांदोग्य नामक ब्राह्मण ग्रंथ का उपनिषद् (सारतत्त्व या रहस्य)।

छाँट स्त्री. (देश.) 1. छाँटने का काम, काटना, कतरने का काम 2. काटने का तरीका 3. अनाज का ऊपरी विकार या भूसी।

छाँटन स्त्री. (देश.) 1. वह तत्व जो अलग कर दिया जाए, विकार 2. अलग की हुई बेकार की चीज।

छाँटना स.क्रि. (देश.) 1. काटना, कतरना, किसी पदार्थ से उसके किसी अंश को चुनकर हटाना। प्रयो. सर्दी आते ही माली ने पेड़ छाँटना शुरू कर दिया 2. काट-छाँटकर कोई वस्तु नियोजित करना प्रयो. दरजी कमीज बनाने के लिए कपड़ा छाँटता है 3. अनाज से भूसी अलग करना प्रयो. वह धान से भूसी छाँट रहा है।

छाँदना स.क्रि. (देश.) 1. रस्सी से पैरों को बाँधना, जकड़ना या कसना 2. वस्तुएँ या सामान बाँधना।

छाँस स्त्री. (देश.) 1. अनाज छाँटने के क्रम में निकली भूसी आदि 2. कूड़ा-करकट।

छाँह स्त्री. (देश.) 1. छाया 2. धूप, ताप या वर्षा से बचने के लिए छाया युक्त स्थान 3. शरण, आश्रय, प्रतिबिंब मुहा. छाँह करना- ओट करना, सामने न पड़ना; छाँह में होना- छिप जाना; छाँह धूप न गिनना- सुख-दुख को न विचारना।

छाँही स्त्री. (देश.) दे. छाँह।

छा स्त्री. (देश.) 1. छादन, छाना 2. छोटा बच्चा, शिशु

छाई स्त्री. (देश.) 1. भस्म या राख 2. जले हुए कोयले का चूर्ण या भस्म अ.क्रि. आवृत हो गई, फैल गई, भर गई, अच्छादित।

छाक स्त्री. (देश.) 1. तृप्ति या तृप्त होने का भाव 2. दोपहर में किया जाने वाला भोजन 3. मादकता, नशा, मस्ती 4. मैदे से बना एक प्रकार का पकवान (माठ)।

छाकना अ.क्रि. (देश.) 1. खा पीकर तृप्त होना, अघाना 2. नशीली चीज से मदमस्त हो जाना।

छाग पुं. (तत्.) 1. बकरी का शावक, बकरा 2. मेष राशि (ज्यो.) 3. न चल सकने वाला घोड़ा 4. यज्ञ में डाली जाने वाली आहुति 5. बकरी का दूध।

छागल पुं. (तत्.) 1. बकरा 2. बकरे की खाल से बनी हुई वस्तु, मशक आदि 3. एक प्रकार की मछली स्त्री. 1. पानी भरने के लिए चमड़े की मशक 2. मिट्टी से बना करवा 3. एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ पैरों में पहनती हैं 4. घुंघरुओं वाला चांदी का गोल कड़ा।

छाछ स्त्री. (देश.) मक्खन निकले दूध या दही का मट्ठा।

छाज पुं. (तद्.) सूप, अन्न को साफ करने के लिए सीक का बना पात्र।

छाजन पुं. (देश.) ढँकने का कपड़ा, प्रयोग में जैसे भोजन छाजना (खाना कपड़ा) स्त्री. (देश.) 1. छप्पर, खपरेल आदि की छत 2. छप्पर को छाने या ढकने की क्रिया 3. सजावट, वेशभूषा आयु. तलवा और उंगलियों के जोड़ के पास फटकर चिड़चिड़ाने वाला कुष्ठ का रोग।

छाजना अ.क्रि. (देश.) 1. शोभामय लगना, सुंदर दिखाई पड़ने वाला, फबना, सुशोभित होना 2. छाजन लगाना।

छाता पुं. (देश.) धूप, ताप, वर्षा से सुरक्षित रखने वाला प्रायः लोहे की कीली और तीलियों पर आच्छादित वस्त्र से बनी युक्ति।

छाती स्त्री. (तद्.) 1. सीना, हृदयस्थल 2. पेट और गरदन के बीच का भाग मुहा. छाती जलना- संतप्त होना, मन में जलना, डाह से मन में जलन होना; छाती ठंडी करना- जी की जलन मिटाना; छाती निकालकर चलना- अकड़ कर चलना; छाती पर चढ़ना- कष्ट पहुँचाने के लिए पास जाना; छाती पर साँप लोटना- मन मसोरना, मानसिक व्यथा होना, ईर्ष्या से दुखी होना; छाती पीटना- शोक के आवेग में वक्ष पर आघात